E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 3 | March 2025

बौद्धकालीन साहित्यमे अभिव्यक्त कृषि-कर्म

राजनाथ पंडित
शोधार्थी (जे.आर.एफ.), विश्वविद्यालय मैथिली विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

सारांश :-
बौद्ध कालमे खेती-बाड़ीक समुचित विकास भेल छल आ ई लोकक मुख्य व्यवसाय छल। सामाजिक प्रतिष्ठामे कृषिक उच्च स्थान छल आ किसान महत्वपूर्ण मानल जाइत छल। बौद्ध कालमे खेती मात्र रोजी-रोटीक साधन नहि, अपितु एकटा महत्वपूर्ण सामाजिक आ नैतिक कार्य सेहो मानल जाइत छल। एहि कालखंडमे कृषिक महत्व एहि बातसँ स्पष्ट अछि जे तथागत बुद्ध स्वयं आ हुनक अनुयायी लोकनि सेहो कृषि कार्यमे लागल छलाह। बौद्ध कालमे कृषि आ पशुपालन दुनू महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि छल आ एक दोसरासँ घनिष्ठ संबंध छल। तथागत बुद्ध पशु बलिक विरोध करैत छलाह आ पशुधनक संरक्षणकेँ महत्वपूर्ण मानैत छलाह। एहि कालमे कृषि आ पशुपालनक बीच अंतर्निहित संबंध छल। गायक रक्षा गृहस्थक एकटा महत्वपूर्ण कर्तव्य मानल जाइत छल। लोहाक हऽरक प्रयोग खेतीमे क्रांति अनलक आ पशु बलिक विरोध पशुधनक सुरक्षाकेँ उच्च स्थान देलक। जमीनक वर्गीकरण ओकर उर्वरताक आधार पर होइत छल आ कृषि काजक संग धार्मिक संस्कार सेहो होइत छल। भगवान बुद्ध किसानक कर्तव्य आ कृषिक महत्व पर प्रकाश दैत अछि। ग्रन्थमे बौद्ध कालमे कृषिक महत्वपूर्ण भूमिका आ विभिन्न फसिलक खेतीक तरीका पर प्रकाश देल गेल अछि। धानक खेतीक विशेष महत्व देल गेल अछि आ एकरा मोक्ष प्राप्त करबाक मार्ग मानल जाइत अछि। खेतक रक्षाक उपाय कयल गेल आ अन्य फसिलक संग कुसियारक खेती सेहो महत्वपूर्ण छल। कृषि पद्धति आ फसिलक विविधताक वर्णन बौद्ध ग्रंथमे भेटैत अछि। जातक कथा सभसँ पता चलैत अछि जे किसान अपन फसिल चुनबा लेल स्वतंत्र छलाह आ खेती प्रणालीमे नव तकनीकक प्रवेश केलथि। धान ओहि समयक मुख्य फसिल आ लोकक प्रिय भोजन छल। अन्य फसिल जेना जौ, कपास, दालि, तिल, चिनिया बदाम, मटर, उड़िद, सरिसो आ मसूरी उल्लेख सेहो अछि। बौद्ध कालमे कृषिक महत्वपूर्ण भूमिका आ विभिन्न फसिलक खेतीक तरीका पर प्रकाश देल गेल अछि। भिन्न-भिन्न प्रकारक फसिल, मसल्ला आ तरकारीक खेती होइत छल आ खेतीक काजमे विभिन्न प्रकारक हथियारक उपयोग होइत छल। खेती अर्थव्यवस्थाक मुख्य आधार मानल जाइत छल आ पशुधन पर निर्भर छल।
बीज-शब्द :- *बौद्धकाल, फसिल, कृषक, अर्थव्यवस्था, कुसियार, पशुपालन, खेती-बाड़ी*

प्रस्तावना

बौद्धकालीन साहित्यक अध्ययन-अनुशीलन, विवेचन – विश्लेषणक पश्चात ज्ञात होइत अछि जे ओहि समयमे खेती-बाड़ी करब गौरवक काज बुझल जाइत छल। नहि केवल जनता अपितु राजा स्वयं खेती-बाड़ीमे संलग्न रहैत छलाह। अर्थात् तत्कालीन समाजमे कृषिक समुचित विकास भऽ चुकल छल आ कृषि-कर्म लोकक प्रमुख कार्य छल। प्रसिद्ध इतिहासकार प्रोफेसर राधाकृष्ण चौधरी अपन 'प्राचीन भारत का आर्थिक इतिहास'क अन्तर्गत पालि बौद्धधर्म ग्रन्थक रचनाकाल 400-300 ई० पू० मानैत छथि एवं 'जातक'क रचनाकाल द्वितीय शताब्दी ई० पू० मानैत छथि। 1 हमरा लोकनि जनैत छी जे ओहिकालमे राजकुमार सिद्धार्थ, राजा शुद्धोधन आ शाक्य वंश विद्यमान छल। जँ हम शाक्य वंशक अध्ययन करैत छी तँ स्पष्ट होइछ जे शाक्य वंशक राजा शुद्धोधन, हुनक सभ भाय एवं समस्त जनता मिलि कऽ खेती करैत छलाह। जातक सभमे वार्षिक संस्कारक रूपमे 'वपनोत्सवक' वर्णन भेटैत अछि। राजा जखन कृषक सभ संगे बाउग करबाक लेल जाइत छलाह तँ कृषक लोकनिक प्रसन्नताक सीमा नहि रहैत छल। जखन फसिल बाउग करबाक

समय अबैत छल तऽ हजारक हजार हऽर-बड़द एकहि बेर खेतमे उतरैत छल। बाउग करैत काल ई लोकनि एकटा उत्सव मनबैत छल जकरा 'वप्पमंगल' कहल जाइत छल। 2 एहिसँ एहन लगैत अछि जे कृषिक तत्कालीन समाजमे समुचित विकास भ' चुकल छल। ओहि कालमे कृषि-कर्म लोकक प्रमुख कार्य छल। प्रारम्भिक बौद्ध साहित्यक अध्ययनक उपरांत प्रतीत होइत अछि जे सामाजिक मान्यतामे कृषिकेँ उच्च स्थान प्राप्त छल। संयुक्त निकायमे खेतक तीन प्रकार उल्लेख अछि – उत्कृष्ट मध्यम आ निम्न। 3 विनयपिटकमे तीन उत्कृष्ट व्यवसायमे कृषिकेँ प्रथम स्थान देल गेल अछि। आन दूटा व्यवसाय व्यापार आ पशुपालनकेँ कहल गेल अछि। जाहिमे भिक्षुक तुलना उत्कृष्ट खेतसँ, उपासकक मध्यम खेतसँ आ ब्राह्मण, सन्यासीक तुलना निम्न खेतसँ कयल गेल अछि। खेत हर- बड़दसँ जोतल जाइत छल। पटौनीक लेल वर्षाक जल पर निर्भर रहैत छल। भिन्न-भिन्न जातकमे वर्णन भेटैत अछि जे वर्षाक आभास होइतहि कृषक सभ अपन हाथमे फरसा आ छिट्टा लऽ कऽ निकलि जाइत छल्लाह। खेतक फसिलकेँ कतेक महत्व देल जाइत छल, ओ एहि बातसँ स्पष्ट होइत अछि जे जन सामान्यमे वर्षाकालमे बुद्धक शिष्य द्वारा विचरणसँ उत्पन्न रोषक विविध कारणक सूचीमे फसिलक हानिक चर्चा सभसँ पहिने कयल गेल अछि। विपरीत परिस्थितिमे पोखरि, नहरि अथवा ईनारसँ सेहो पटौनी कयल जाइत छल। फसिल पकलापर काटिक' खरिहानमे आनल जाइत छल आ झारि-फटकिक' कोठीमे राखल जाइत छल। कृषि-कार्य करबाक इएह सामान्य प्रक्रिया छल। कृषि-कार्य करयवलाकेँ 'कृषक' तथा खेतकेँ 'क्षेत्र' कहल जाइत छल। 4

खेती जीतब, बीया बाउग करब, खेत पटायब, ढ़ाठ बनायब, मोथा उखाड़ब, फसिल पकलापर काटव, बोझा बान्हब, बोझाकेँ कटही गाड़ी पर राखब आदिकेँ 'खलमण्डल' कहल जाइत छल। 5 एकठाम कृषकक काजकेँ एहन लाक्षणिक प्रारूप बनावय वला बुझल गेल अछि, जकरा भिक्षु द्वारा अनुसरण कयल जयबाक चाही। एकटा कृषक अपन खेतकेँ नीक जकाँ जोतैत अछि आ माटिकेँ कृषि योग्य बनबैत अछि। खेतमे पानि पहुँचबैत अछि आ ओकरा बाहर निकालैत अछि। ई तीनू ओकर अत्यावश्यक कर्तव्य अछि। ह'रक लेल लांगल शब्द प्रयुक्त होइत छल। आओर एहि लेल जे उपकरण उपयोगमे अबैत छल, ओहिमे प्रमुख छल – हऽर, फार, कुल्हड़ि, कोदारि, हथौड़ी, खुरपी आदि। खेतीक लेल उर्वर भूमिक रहनाय आवश्यक होइत अछि। 6 सामान्यतः एहिठामक भूमि कृषि योग्य होइत छल। संगहि एहू बातक संकेत भेटैत अछि जे कृषि हऽर आ बड़दक सहायतासँ होइत छल एवं सही समयपर बीया बाउग कऽ देल जाइत छल। ओना काँकड़,पाथर, ऊसर आदि अनेक प्रकारक भूमि होइत छल, जकर उल्लेख बौद्ध ग्रंथमे भेटैत अछि। ध्यातव्य थिक जे ओहू समयमे लोक जमीन पर अपन-अपन हक रखैत छल आ जमीन छोट-छोट टुकड़ीमे विभाजित भऽ जाइत छल मुदा ओहि छोट टुकड़ीमे खेती नहि कऽ सभकेँ एकहिमे मिला देल जाइत छल आ सामूहिक खेती कयल जाइत छल ।7 अधिकार हुनके होइत छल जिनक ओ खेती रहैत छल। पानिक पटौनीक लेल जे नाला रहैत छल ओकरे अनुसार ई खेतीक टुकड़ा विभाजित रहैत छल। जाहिसँ ई दृश्य अद्भुत ओ आश्चर्यचकित करयवला लगैत छल। जखन राजकुमार सिद्धार्थ अपन घरसँ बहरयलाह आ बुद्धत्व प्राप्त कयलाक बाद मगध होइत कतहु जा रहल छलाह तँ मगधक खेत सभकेँ देखलनि। देखैत देरी अपन प्रिय शिष्य आनंदसँ कहलनि – "आनंद जमीनक ई छोट-छोट टुकड़ा सदृश वस्त्रकेँ जोड़ि कऽ सिलवा दिअ जे हम भिक्षु लोकनिकेँ देब। एकटा बात आओर ओहि वस्त्रक रंग ओहने होयबाक चाही जेहन किसान द्वारा उगाओल गेल फसिलक रंग होइत अछि अर्थात् धानक रंग सन होयबाक चाही ।"8 एहिसँ ई लक्षित होइत अछि जे तथागत प्रकृतिक प्रति कतेक सजग रहथि आ किसानक प्रति कतेक आदर आ स्नेह रखैत छथि। हमरा लोकनि तथागतक प्रवचनमे कतेको बेर सुनि सकैत छी जे ओ राजा सभकेँ उपदेश दैत छलाह जे किसानक प्रति राजाकेँ उत्तरदायी होयबाक चाही आ किसानकेँ सम्मानक दृष्टिसँ देखबाक चाही। एहितरहेँ एकटा भिक्षुकेँ सलाह देल जाइत अछि जे ओ उच्च नैतिकता, उच्च विचार एवं उच्च अन्तर्दृष्टिमे शिक्षा ग्रहण करय। महात्मा बुद्ध कृषकक आर्थिक स्थिति, आवश्यकता एवं हुनक समस्यासँ नीक जकाँ परिचित छथि। ओ राज्य द्वारा निर्धन कृषककेँ संरक्षण देबाक बात करैत छथि। दीघनिकायमे एकठाम सुझाव दैत छथि जे कृषककेँ अनाज, व्यापारीकेँ पूँजी एवं मजदूरकेँ उचित मजदूरी देल

जयबाक चाही। बुद्धक एहि उक्तिसँ स्पष्ट होइत अछि जे कृषकक प्रति कतेक उदार, सहानुभूतिपूर्ण आ सम्मानजनक विचार रखैत छलाह। ताहि दिनमे कृषि कर्म कोनो जातीय पेशा नहि अपितु गामक प्रत्येक मनुक्ख मिलिजुलि कऽ खेती-बाड़ी करैत छलाह। ओहि समयमे एकटा संकल्पना होइत छल – 'ग्राम खित्त' अर्थात् गामक खेत। 9 ई 'ग्राम खित' वला बात कालांतर मे बाबा साहेब डॉ० भीमराव अम्बेडकरक खेतीक समस्या पर लिखल प्रबन्धमे प्रतिबिम्बित होइत अछि। जाहिमे सामूहिक खेती करबाक बात आ खेतीकें नेशनलाइजेशन व्यावसायिकरण करबाक बात कहल गेल अछि जाहिसँ किसानक जीवन सुखी-सम्पन्न ओ समृद्ध हुअय। संगहि नहि केवल खेती अपितु पशुपालनक सेहो विशेष महत्व छल। किएकतँ कृषिक उन्नतिक लेल आवश्यक छल। बौद्धक सिद्धांत जीव सभक प्रति अहिंसाक भाव आ वैदिक यज्ञक विरोधमे हुनक प्रतिक्रिया पशुधनक रक्षामे पैघ सहायता देलनि, जकर कारण कृषिक विकासमे सहयोग भेटल। 10 खेती बाड़ी आ पशुपालन दुनू एक-दोसरसँ जुड़ल उद्योग होइत छल। जखन तथागत बुद्ध अपन उद्देश्य आ प्रवचनकें आगू बढ़बय लगलाह तऽ ओ देखलनि जे यज्ञमे पशु बलि देल जा रहल अछि। पशु बलिक सभसँ पैघ विरोध तथागत बुद्ध कयलनि। बुद्ध ओहि वैदिक यज्ञक आलोचना कयलनि जाहिमे पशुबलि देल जाइत छल। संयुक्त निकायमे एकटा कथा भेटैत अछि जे ओ जखन एकबेर श्रावस्ती गेलाह तऽ कौशलक राजा प्रसेनजित एकटा यज्ञ प्रारम्भ कयलाह। एहि यज्ञमे 500 बड़द, 500 बछड़ा आ 500 भेंड़, बलिक लेल खुंटासँ बान्हल गेल छल। राजाक सेवक, दूत आ मजदूर लोकनि भयसँ आतंकित रहितो, नोर भरल आँखिसँ यज्ञक तैयारी कऽ रहल छलाह। जखन महात्मा बुद्धकें पता लगलनि तऽ कहलनि जे अश्वमेध', 'पुरुषमेघ' आ 'वाजपेय' आदिसँ नीक परिणाम नहि भेटत। उत्कृष्ट ऋषि एहन यज्ञक अनुशंसा नहि करैत छथि, जाहिमे गाय, बड़द, बकरी आ भेंड़ जेहन जीवकें हत्या कयल जाय। 11 एहिसँ स्पष्ट होइत अछि तथागत बुद्ध पशुबलिक विरोध धार्मिक दृष्टिक अपेक्षा आर्थिक दृष्टिसँ कयलनि किएकतँ पशुधन कृषि आधारित छल जे युगक आवश्यकताक अनुकूल छल। एहन समयमे पशुक रक्षा क्रान्तिकारी काज छल, जखन भोजन आ धर्म अथवा दुन्नू काजक लेल पशु हत्या कयल जाइत छल। तखन ओ गोवंश रक्षा, बड़दक रक्षा आ अन्य पशुक रक्षाक लेल बहुत पैघ अभियान चलौलनि। एहितरहें ओ-पशुपालमे सर्वोच्च स्थान देलनि जे हमर मानव जीवनक जीवनशैलीक हिस्सा छल। तत्कालीन जतेक गणराज्य ओ जनपद छल, सभक अर्थव्यवस्थामे मुख्य आधार खेती-बाड़ी आ पशुपालन होइत छल।

प्रारम्भिक बौद्ध साहित्यमे कृषिक संदर्भमे नव आ महत्वपूर्ण तथ्य दृष्टिगोचर होइत अछि जे बौद्धकालमे कृषिकें पशुपालन पर आश्रित कहल गेल अछि। पशुमे गायक स्थान अद्वितीय छल किएकतँ एहिसँ केवल दूधहि नहि अपितु एकर बछड़ा बड़दक रूपमे कृषि कर्मक लेल विशेष उपयोगी छल |

सुतनिपातमे कृषि आ गाय पालनकें एकहि बुझैत कहल गेल अछि, ओ व्यक्ति जे गाय- बड़द पोसैत अछि, तकरे कृषकक रूपमे चिन्हल जाइत अछि। एहि ग्रंथमे एकठाम इहो कहल गेल अछि माता, पिता, बंधु आ सगे-संबंधी जकाँ पशु हमर मित्र अछि आ तकरे कारण पौधा विकसित लोइत अछि। ओ अन्न, बल, शोभा आ सुखक स्रोत अछि तेँ अवध्य अछि। 12 गाय पालन एवं गाय-बड़दक रक्षा गृहस्थक महत्वपूर्ण काज कहल गेल अछि। जँ हम बौद्ध कालमे कृषि तकनीकीक क्षेत्रम आयल क्रांतिकारी परिवर्तनक विषयमे एहि उद्धरण तथा महात्मा बुद्धक शिक्षापर विचार करी तऽ नीक जकाँ बुझि सकब। वस्तुतः वैदिक विचारधारा लोहाक हऽर-फार कृषिक अनुकूल नहि छल। वैदिक परम्परामे गाय-बड़दकें मारबाक प्रबन्ध छल, जखनकि हऽरमे लोहाक फार द्वारा खेतीक आवश्यकताक पूर्तिक लेल आब एकर सुरक्षा आवश्यक छल। बौद्ध लोकनि द्वारा पशुबलिक बहिष्कार एवं पशु सभक अहिंसा पर बल नव कृषिक आवश्यकताक संदर्भमे नव-नव महत्व प्राप्त करैत अछि ।

तत्कालीन समयमे भारतक भूमि कृषि कर्मक योग्य छल आ खेती सेहो जीविकोपार्जनक मुख्य स्रोत छल। एहि ठामक भूमि प्रारम्भ कालहिसँ उत्पादन योग्य उपजाऊ छल। यद्यपि इतिहासक आन स्रोतमे सेहो कृषि योग्य भूमिक वर्णन

भेटैत अछि। बौद्ध साहित्यमे एकर विस्तृत विवरण भेटैत अछि। ओना हम एहि निष्कर्ष पर बौद्ध साहित्यक आधारे पर पहुंचैत छी जे तत्कालीन समाजमे भूमिक वर्गीकरण उत्तम, मध्यम एवं निम्न कोटिक आधार पर कयल जाइत छल।

प्राचीन कालमे खेतीक कार्य सेहो एकटा धार्मिक कृत्य छल। एहि लेल सेहो शकुन आदिक प्रक्रियाक सहारा लेल जाइत छल। बीआ बाउग करबाक निश्चित समय होइत छल। धान बाउग करबाक लेल आषाढ़ मासक शुक्ल पक्ष आ भादो मास उपयुक्त बूझल जाइत छल। गेहूँ, जौ आदिक बाउग करबाक लेल कार्तिक आ माघमे शुक्ल पक्षक पंचमी, षष्ठी, सप्तमीक दिन बाउग करत बेसी नीक बुझल जाइत छल। किएकतँ एकरा लेल आर्द्रता (नमी) आवश्यक होइत छल।

एक बेर भगवान बुद्ध श्रीवस्तीमे उदय नामक ब्राह्मणसँ कहैत छथि –

“बेर बेर बीआ बाउग करैत छी

बेर-बेर मेघ बरसैत अछि

बेर-बेर किसान खेत जोतैत अछि ।“ 13

एहि उद्धरणसँ स्पष्ट अछि जे बाउग करबाक लेल खेतक तैयारी विधिवत कयल जाइत छल। खेतीकेँ तैयार करबाक सम्बन्धमे भगवान बुद्ध कृषक लोकनिक कर्तव्यक विवेचन करैत छथि।

एकर अतिरिक्त जखन गृहस्थक धान पाकि कऽ तैयार भऽ जाइत अछि तऽ खरिहानमे रखैत अछि, गोरसँ मैजैत अछि, डाँट हटबैत अछि, भूसा उड़बैत अछि, धान एकत्रित करैत अछि, कूटैत अछि एवं ओकर भूसी उड़बैत अछि। एहितरहेँ ओकर फसिल पूर्णताकेँ प्राप्त करैत अछि। एहि उपमाक संग बौद्ध अपन भिक्षु सभकेँ सलाह दैत छथि जे मोक्ष प्राप्त करबाक लेल, क्रियाशील आ सावधान रहब आवश्यक अछि। ई उपमा स्पष्ट करैत अछि जे बौद्ध कृषि कार्यकेँ कतेक बेसी महत्वपूर्ण मानैत छलाह। भगवान बुद्ध कहैत छथि –“भिक्षु लोकनि ! कृषक गृहस्थ शीघ्रताशीघ्र खेतमे हऽर जोति कऽ एवं ओहिमे बीआ बाउग कऽ पानि दैत अछि आ समयपर बन्द करैत अछि। 14 इएह कृषक गृहस्थक अनिवार्य कर्तव्य अछि। खेतक रखवारीक उचित उपाय छल। लक्खणजातकमे खेतक सुरक्षाक सम्बन्धमे एकटा प्रसंग भेटैत अछि, जे एहितरहेँ अछि – “मगध देशमे खेतीक दिनमे, फसिल पाकय काल जंगलगे हरिणसँ खतरा होइत छल। खेती चरय वला हरिणकेँ दूर रखबाक लेल जतय-ततय खदिया बना, काँट बिछा, पत्थरक गुलेठीसँ कूटपासक बंधन पसारि, जाहिसँ बहुत रास हरिण मारल जाइत छल ।“ 15 एहिसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे एहि साधनसँ खेतक सुरक्षा कयल जाइत छल। बौद्ध साहित्यक अनुसार ओहि कालमे कृषि कार्य क’ अनेक प्रकारक फसिल उपजाओल जाइत छल। बौद्ध ग्रंथमे मुख्य रूपसँ धानक वर्णन भेटैत अछि। एहिसँ ई प्रतीत होइत अछि जे ओहिकालमे धानक खेती बेसी होइत छल आ चाउर ओकर मुख्य आहार छल। एहितरहेँ विभिन्न जातक सभमे सेहो धान (सालि) क वर्णन भेटैत अछि। कपिजातकमे ई भेटैत अछि जे एक दिन धान कूटयवाली दासी रौदमे पसरल अपन धानकें खायवला बकरीकेँ जरैत लकड़ीसँ मारलनि। एहिसँ ई परिलक्षित होइत अछि जे धानक खेती विशेष रूपसँ होइत छल। एकर अतिरिक्त जौ, उरीद, मूंग, बाजरा, कपास, गेहूँ, कोदो, तिल, सरसो आदिक वर्णन सेहो भेटैत अछि ।

कुसियार खेतीक उल्लेख बौद्ध ग्रन्थमे प्रचुर मात्रामे कयल गेल अछि। ऊखक खेती कोना कयल जाइत अछि, , एकर उल्लेख सेहो कयल गेल अछि। भगवान बुद्ध अंगुत्तरनिकायमे भिक्षुसँ कहैत अछि - भिक्षु ! कुसियारक बीया हुअय, ओ भीजल धरतीमे गाड़ल गेल अछि, ओ जतेक पृथ्वी-रसकेँ ग्रहण करैछ ओ सभ मधुर सेहो होइत अछि। 16 कुसियारक पेराइक वर्णन सेहो बौद्ध ग्रन्थमे भेटैत अछि। महराज : रस निकाले लेल लोक कुसियारकेँ कोल्हूमे पेरैत अछि। एहिसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे ओहि कालमे कुसियार कोल्हूमे पेरल जाइत छल। धान आ जौक संग उखि सेहो

तत्कालीन समयमे बेसी मात्रामे उपजाओल जाइत छल। धान आ कुसियारक खेतमे लागय वला रोगक वर्णन सेहो बौद्ध ग्रन्थमे भेटैत अछि। तथागत बुद्ध अपन शिष्यकेँ कहैत छथि –

आनन्द ! जेना कोनो लहराइत धानक खेतकेँ सफेदा नामक रोग लागि जाइत अछि तँ ओ धानक खेत चिरस्थायी नहि होइछ। एहि तरहेँ कोनो लहराइत कुसियारक खेतकेँ लाल रोग लागि जाइत अछि। 17

एहिसँ ई विदित होइछ जे धान आ कुसियारक खेत बहुत पहिनेसँ होइत छल, किएकतँ एकर वर्णन हमरा विशेष रूपसँ उदाहरणक रूपमे बौद्ध ग्रन्थमे भेटैत अछि ।

बौद्ध ग्रंथ जातकसँ ज्ञात होइत अछि जे तत्कालीन कृषक – समुदाय कृषिक क्षेत्रमे पूर्वक अपेक्षा आओर प्रगति कयल, जाहिसँ कृषि प्रणालीमे नव युक्तिक समावेश भेल। खेतिहरकेँ खेतीक लेल फसिल चुनाव करबाक स्वतंत्रता छल, परिणामस्वरूप कृषक, जलवायुक अनुकूल आ उपज दर अनुसारेँ अन्नक उत्पादनक लेल कटिबद्ध भेलाह। एहि उपजमे अन्नक भौतिक जीवनक प्रति उपयोगिताकेँ धियानमे रखैत वृहद्ताक नीति अपनाओल जाय लागल तथा आवश्यकताक पूर्तिक लेल फल एवं वृक्षकेँ सेहो महत्व देल जाय लागल। अन्न एवं फलक उत्पादनसँ सम्बन्धित अनेक रोचक एवं मनोरंजन पूर्ण कथा जातक साहित्यमे भेटैत अछि। बौद्ध कालक प्रमुख उपज धान छल। जातक साहित्यमे धानक खेतीसँ सम्बन्धित अनेक वर्णन भेटैत अछि। धानक विपुल उल्लेख ई इंगित करैत अछि जे एहि युगक लोकक सभसँ लोकप्रिय आ मनपसंद आहार चावल छल ।

काम जातकसँ ई ज्ञात होइत अछि जे श्रावस्ती वासी एकटा ब्राह्मण अचिरावती नदीक कछेड़ पर धानक खेती कयने छलाह, मुदा सए गाड़ी धानक फसिल मूसलाधार बरखाक कारणेँ बहि गेल। कपि जातकसँ ज्ञात होइछ जे एक दिन धान कूटयवाली दासी रौदमे पसरल धान खायवाली एकटा बकरीकेँ जरैत जारनिसँ मारलनि। 18 जातक कथामे जौक सेहो साक्ष्य भेटैत अछि। जौ फसिलक रक्षार्थ बान्ह बान्हय एवं ओकर रखवारी करबाक उल्लेख भेटैत अछि ।

अगुंतर निकायमे एक ठाम शास्ता भिक्षुसँ कहैत छथि – भिक्षु ! धानक बालि हुअय वा जौ, ओ ठीकसँ नहि राखल गेल आ ओहिपर जँ हाथ-पएर पड़ि जाय त' संभावना अछि जे ओकर हाथ-पएर बिन्ह जायत आ रक्त निकल' लागत। अतः स्पष्ट अछि जे बौद्ध युगमे धान एवं जौक खेती सभसँ लोकप्रिय छल ।

कपासक खेतीक उल्लेख सेहो जातक एवं अन्य बौद्ध साहित्यमे वर्णित अछि। खेतमे कपास बिछबाक काज बेसी महिला लोकनि करैत छलीह। महाजनक जातकसँ ज्ञात होइत अछि जे महिला द्वारा धुनकीसँ कपासक धुनाई कयल जाइत छल। जातकमे दलहन एवं तिलहनक उपजमे दालि एवं तिलक सर्वाधिक साक्ष्य उपलब्ध होइत अछि। तिलमुट्ठी जातकसँ विदित होइछ जे एकटा बुढ़िया द्वारा तिलकेँ साफ क' पसारय पर एक विद्यार्थी राजकुमार साफ तिलकेँ देख खयबाक इच्छासँ एक मुट्ठी तिल चोरा क' खा लेलनि। तिलक उपजसँ सम्बन्धित अनेक कथाक उल्लेख जातक साहित्यमे भेटैत अछि। तत्कालीन समाजमे भोजनक आवश्यक अंग दालिक रूपमे मुंगक उपयोग विशेष रूपसँ कयल जाइत छल। एकर अतिरिक्त दैनिक जीवनमे निर्वाहसँ सम्बन्धित आन अन्नक साक्ष्य सेहो जातक साहित्य मे भेटैत अछि। एहिमे मटर, उरीद, सरसो, मसूरी, सन तथा पान आदि प्रमुख अछि। तत्कालीन समाजक दैनिक जीवनमे एकर उपयोग आम लोक द्वारा कयल जाइत छल ।

बौद्ध साहित्यमे खेतीसँ सम्बन्धित अनेक उद्धरण प्राप्त होइत अछि। छदन्त जातकमे विशालकाय कुसियारक वनक वर्णन भेटैत अछि। कुसियारक खेती कोन विधिसँ कयल जाइत छल, बौद्ध साहित्यमे वर्णित अछि। अंगुतर निकायमे भगवान बुद्ध भिक्षुकेँ सम्बोधित करैत कहैत छथि जे भिक्षु ! जेना कुसियारक बीआ हो, ओ भीजल माटिमे मीठगर होइत अछि,

ओ जतेक पृथ्वी रसकैं ग्रहण करत, ओतेक मीठ होयत। 18 एहितरहैं हम देखैत छी जे मुख्य फसिलक रूपमे कुसियारक खेती सेहो पर्याप्त मात्रामे कयल जाइत छल ।

जातक साहित्यमे अन्नक उत्पादनक संग-संग मसल्लाक खेतीक उल्लेख सेहो भेटैत अछि। एहि मसल्लामे मिर्च, लहसुन, हरदि, आद, हींग, जीरा, पिल्ली आदि प्रमुख छल। सम्भवतः एहि व्यंजनकैं तैयार करैत काल रसास्वादनक लेल एहि मसल्लाक विशेष आकर्षण रहल होयत।जातक कथामे तरकारीक उपजक साक्ष्य सेहो प्राप्त होइत अछि। तरकारी बेचबाक कतेक रोचक प्रसंग एहि कथामे भेटैत अछि। तरकारी बेचय वलाकैं कुंजडे शब्दसँ सम्बोधित कयल जाइत अधि। एहि उपजमे खीरा, सजिमन आदि तरकारीक उल्लेख भेटैत अछि ।

निष्कर्ष

बौद्ध कालमे विविध प्रकारक अन्नक खेतीक उल्लेख प्राप्त अछि। गौतम बुद्धक पिता शुद्धोधन छलाह जिनक अर्थ शुद्ध चावल होइछ। एहिलेल एहि क्षेत्रमे आइयो धानक खेती खूब होइछ जकर वर्णन विशिष्ट रूपसँ बौद्ध साहित्यमे कयल गेल अछि। ताहि दिनमे औद्योगिकीकरण एतेक नहि छल मुदा आइ जखन हम अपन ग्रामीण जीवनकैं कनेक कात कऽ देलहुँ आ औद्योगिकीकरण दिस बढ़ि रहलहुँ अछि तऽ एकरा संग पूँजीवाद सेहो ठाढ़ होबय लागल। जखन पूंजीवाद ग्रामीण जीवन पर आघात करय लगैछ तँ ग्रामीण जीवन समाप्त भए जाइत अछि। किएकतँ जमीन छोट-छोट टुकड़ीमे विभाजित भऽ जाइत अछि आ ओहीसँ जीवन-यापन करय पड़ैत अछि। वर्तमानमे किसान अपन जमीन बचयबाक लेल आ अपन फसिलक उचित मूल्य प्राप्त करबाक लेल संघर्ष कऽ रहल अछि। एहिलेल हमरा लोकनिकैं अपन अतीतसँ सीखबाक चाही। एहितरहैं प्रारम्भिक बौद्ध साहित्यसँ सुस्पष्ट होइत अछि जे ओहि युगक अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित छल आ कृषि-कर्म पशु-धन पर आश्रित छल। कृषिक क्षेत्रमे हऽरमे लोहाक फार क्रान्तिकारी प्रयोग सिद्ध भेल जाहिसँ खेती-बाड़ी पैघ-स्तर पर संभव भेल। बुद्ध द्वारा पशुबलिक बहिष्कार नव-कृषि तकनीकक आवश्यकताक सन्दर्भमे विशेष महत्व रखैत अछि। लोहाक उपकरणक प्रयोग कऽ बहुत पैघ स्तरपर जंगल काटि कऽ कृषि योग्य भूमिक विस्तार कयल गेल। फलतः पैघ मात्रामे उत्पाद अधिशेष उपलब्ध होबय लागल, जे पाथर अथवा ताँबाक उपकरणसँ प्राप्त करब सम्भव नहि छल। बहुत पैघ मात्रामे ई अतिरिक्त उत्पादन नहि केवल वाणिज्य- व्यापार, विभिन्न शिल्प एवं उद्योग सभक विकासक मार्ग प्रशस्त कयलनि अपितु दोसर नगरीकरणमे नगर बस्तीक विकासक पृष्ठभूमि तैयार कयलक अपितु, जकर पुष्टि नहि केवल प्रारम्भिक बौद्ध साहित्य अपितु पुरातात्विक उत्खननसँ सेहो होइत अछि ।

सन्दर्भ :-

1. प्राचीन भारत का आर्थिक इतिहास राधाकृष्ण चौधरी , प्रथम संस्करण : 1986, जानकी प्रकाशन: पटना , पृष्ठ सं. – 11,12
2. राव,राजवन्त (सं.), भारत में कृषि एवं कृषक समुदाय , प्रथम संस्करण : 2010 , प्रतिभा प्रकाशन : दिल्ली, पृष्ठ सं. – 163
3. वएह , पृष्ठ सं. – 165
4. वएह, पृष्ठ सं. - 171
5. शर्मा, रामशरण, प्राचीन भारत में भौतिक प्रगति एवं सामाजिक संरचनायें, प्रथम संस्करण : 1993 , मोतीलाल बनारसीदास : दिल्ली, पृष्ठ सं. – 171
6. राव,राजवन्त (सं.), भारत में कृषि एवं कृषक समुदाय , प्रथम संस्करण : 2010 , प्रतिभा प्रकाशन : दिल्ली, पृष्ठ सं. – 171
7. वएह, पृष्ठ सं. – 180

8. वएह, पृष्ठ सं. – 181
9. वएह, पृष्ठ सं. – 179
10. शर्मा, रामशरण, पूर्वकालीन भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था पर प्रकाश, प्रथम संस्करण : 1976 , मोतीलाल बनारसीदास : दिल्ली, पृष्ठ सं. – 49
11. शर्मा, रामशरण, प्राचीन भारत में भौतिक प्रगति, प्रथम संस्करण : 1976 , मोतीलाल बनारसीदास : दिल्ली, पृष्ठ सं. – 171
12. राव,राजवन्त (सं.), भारत में कृषि एवं कृषक समुदाय , प्रथम संस्करण : 2010 , प्रतिभा प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ सं. – 162
13. वएह, पृष्ठ सं. – 173
14. वएह, पृष्ठ सं. – 173
15. वएह, पृष्ठ सं. – 175
16. वएह, पृष्ठ सं. – 175
17. वएह, पृष्ठ सं. – 175
18. वएह, पृष्ठ सं. – 176